at this stage, because they are going to introduce a Bill on the same lines. They say that it will be very comprehensive. But I have my own doubts about it.

The then Minister of Health, Dr. Sushila Nayar wanted that ayurved should be killed. So, she included it in the indigenous systems of medicine like homoepathy, hydropathy, unani, naturopathy, siddha, yoga and others. She wanted that there should be some representation for each system on the board so that ayurved will be only one among them. In that way she wanted to kill ayurved. That was her policy. Even the Britishers, while they did not give any encouragement to ayurved, did not dare to harm ayurved. But this Minister did everything in her power to harm ayurved. The damage caused to ayurved by her it is not easy to describe That is why she did not take any action to draft the Bill and kept quiet. So, I was obliged to re-introduce it this session.

Now, of course, we are fortunate that we have three Ministers who have not lip sympathy but real sympathy for ayurved. But the machinery on which they have to depend for implementing their decisions is controlled entirely by allopaths. With those clutches in the Ministry I do not know how these Ministers, in spite of their real sympathy for ayurved, can do something for ayurved. I know that they have sympathy for ayurved. But, at the same time, I would say that government would not be losing anything by circulating that Bill for public opinion.

SHRI SURENDRANATH DWIVEDY (Kendrapara): After all, this Bill is only for circulation which would help government to know the views of the public So, why not accept this ?

SHRI A. T. SARMA : I am also prepared to give this assurance that I am prepared to withdraw my Bill the moment the government bring a comprehensive Bill, which will serve the purpose.

SHRI B. S. MURTHY : All right; I accept it.

SHRI A. T. SARMA : Then I do not want to say anything more. I request the House to accept my motion.

MR. DEPUTY-SPEAKER : The question is :

> "That the Bill to provide for the constitution of an All India Ayurvedic Medical Council for India, maintenance of an Ayurvedic Medical Register for the whole of India and for matters connected therewith, be circulated for the purpose of eliciting opinion thereon by the first day of the next session."
>
> *The motion was adopted.*

12.16 HRS.

TREASON BILL

श्री यशपाल सिंह (देहरादून) : मैं प्रस्ताव करता हूं :

"कि राजद्रोह के दोषी पाये जाने वाले व्यक्तियों को दण्ड देने तथा तत्सम्बन्धी विषयों के लिये उपबन्ध करने वाले विधेयक पर राय जानने के लिये इसे 31 दिसम्बर, 1968 तक परिचालित किया जाय ।"

उपाध्यक्ष महोदय, आप की आज्ञा से मैं ट्रेजन बिल 1967 पर डिस्कशन शुरू करता हूं। हमारे देश के अन्दर इन 20 सालों में देश की राष्ट्रीयता के लिए, सेकुलरिजम के लिए, देश की अपनी अखण्डता के लिए न कोई कालेज है, न कोई स्कूल है न किसी तरह की क्लास लगायी जाती है । जो सबक अंग्रेज ने दिया था वही सबक है जो आज भी रिपीट किया जा रहा है। मच्छर मारने के लिए इन्स्टीट्यूट्स कायम किए जाते हैं, कीड़ों और मकोड़ों के लिए बड़े बड़े डिपार्टमेंट खोले जाते हैं । लेकिन हिन्दुस्तान की इन्टीग्रिटी को कायम करने के लिए कोई ट्रेनिंग नहीं है । श्रीमन्, जिस वक्त रूस ने हथियार देने का तहैया किया और पाकिस्तान को हथियार सप्लाई करने का वायदा किया, हमारे ही यहां बैठे हुए भाई ऐसे थे जो चुप रह गए, जिन्होंने रूस की मजम्मत में एक लब्ज नहीं कहा बल्कि कई लोग ऐसे जो थे जो रूस की इस मामले में तारीफ कर रहे थे । तो कोई स्कूल में हमें ऐसा जरूर निकालना पड़ेगा कि जो आज देश के अन्दर दूसरे मुल्कों की तालीम है वह खत्म हो । देश के अन्दर दूसरे

[श्री यशपाल सिंह]

देशों की जो आज तारीफ हो रही है वह खत्म हो। आप धोखे में थे, यह सरकार धोखे में थी, लेकिन मैं कभी धोखे में नहीं था जब रूस ने यह साफ कर दिया था, शुरू में ही कह दिया था कि चीन हमारा भाई है, हिन्दुस्तान हमारा दोस्त है, तो हम पहले भाई की सहायता करेंगे, कोई हमारे पास साधन बच गया तो हम दोस्त की भी सहायता कर सकते हैं। इस तरह से जिन लोगों की हमदर्दी आज रूस के साथ है या जो अंग्रेज हम को सबक पढ़ाया करते थे, उसी को रिपीट कर रहे हैं, अंग्रेज ने मुसलमान को तालीम दी कि हिन्दू कभी वफादार नहीं हो सकता, हिन्दू को तालीम दी कि मुसलमान कभी वफादार नहीं हो सकता, कब तक इस की पुनरावृत्ति होगी ? 52 करोड़ की भाषा में जब हम सोचेंगे, बावन करोड़ एक मां बाप के बेटे की तरह जब सोचना सीखेंगे, यह एक स्तर पर जब आयेंगे, तब देश बचेगा, नहीं तो देश खतरे में है। यह जो सरकार के मालिक बने बैठे हैं, वह एक लब्ज कभी नहीं कहते कि कैलाश और मानसरोवर को कब वापस लेंगे, हिमालय की बुलन्द चोटियों को कब वापस लेंगे ? वापस करना तो दरकिनार रहा, कोई तारीख यह नहीं तय कर सकते अल्टीमेटम की तो इन्हें इन कुर्सियों पर बैठने का कोई हक नहीं है। यह देश की इग्नोरेंस का लाभ उठा रहे हैं। देश के अन्दर जागृति नहीं है वरना इतना बड़ा देश का हिस्सा दे कर और फिर आज यह कह रहे हैं कि मुल्क को आगे ले जा रहे हैं, हरगिज इस तरह मुल्क आगे नहीं ले जाया जा सकता। यह नारा लगाया जाता है कि एक तरफ दुर्भिक्ष खड़ा है, दूसरी तरफ दुश्मन खड़ा है, पहले दुर्भिक्ष से निपटेंगे फिर दुश्मन से निपटेंगे, यह नारा गद्दारों का दिया हुआ नारा है। हमारा नारा है कि चाहे हम भूखे हों, चाहे हमारे पास रहने के लिये घर न हो, हम दुश्मन का सामना पहले करेंगे हमारा नारा यह है।

दुष्कण्टकों से पूर्ण वृक्षों के शिखर पर वास हो।
खाने पड़े पत्ते मगर न दासता का त्रास हो।

जो आज हिन्दुस्तान की परम्परा का जिक्र कर के और असल मसले को पीछे डाल रहे हैं उनसे मेरी अर्ज है कि इसके लिए कौमियत सिखाने के कालेज होने चाहिए। आखिर कोई तो वजह है कि हम आज इतने लूजर है। जब शेख अब्दुला काश्मीर के अन्दर बोलते हैं तो 2 लाख आदमी सुनते हैं और जब होम मिनिस्टर काश्मीर जाते हैं तो उन के सुनने के लिए पांच सौ आदमी आते हैं। वह भी सरकारी प्रेरणा से। तो कहीं न कहीं हम लूजर हैं। कहीं न कहीं हमारे अन्दर कोई कमी है। अगर हम ऐसा समझें कि हमारे आदर्श बड़े ऊंचे हैं और उन आदर्शों के ऊपर अमल न करें, सिर्फ किताबों में लिख दें, तो वह आदर्श कभी कामयाब नहीं हो सकते।

महात्मा गांधी ने यह कहा था कि हम चाहे मर जायें, कट जायें, लेकिन हम तकसीम मन्जूर नहीं करेंगे। इस हाउस में ऐसे लोग बैठे हैं, हिन्दुस्तान के हजारों मुसलमान ऐसे जिनको मुस्लिम लीग के लीडर कत्ल करवाना चाहते थे। हमारे मौलवी अब्दुल गनी दार साहब को मुस्लिम लीग कत्ल करवाना चाहती थी, लेकिन हमारे हिन्दुस्तान की सियासत ऐसी हो गई कि इन्होंने इस्लाम को और पाकिस्तान को समझ लिया। मैं साफ कह देना चाहता हूं कि पाकिस्तान से हमारी दुश्मनी है, लेकिन जहां तक इस्लामी कल्चर के तहफ्फुज का सवाल है, अगर हम उसके लिये वायदा नहीं करेंगे, उसकी कद्र करने की ट्रेनिंग नहीं देंगे तो हमारा मकसद हरगिज कामयाब नहीं हो सकता। मैं महर्षि अरविन्द घोष के शब्दों में कहना चाहता हूं—संसार की कोई ताकत ऐसी नहीं है जो हिन्दुस्तान और पाकिस्तान को अलग रख सके, ये बाउण्ड्रीज एक दिन जरूर टूटेंगी, ये इन्सान की बनाई हुई हैं, ये आर्टिफिशयल बाउन्ड्रीज हैं जो एक दिन जरूर टूट जायेंगी। दोनों मुल्क एक हो कर रहेंगे,

लेकिन इसके लिये नेशनल इन्टीग्रटी की जरूरत है, नेशनलिज्म की जरूरत है, राष्ट्रीयता की जरूरत है। महात्मा गांधी का वायदा जरूर पूरा होगा। गांधी जी ने सारे संसार के सामने यह वायदा किया था—चाहे देश के चप्पे चप्पे में आग लग जाये, लेकिन मैं पार्टिशन को नहीं मानूंगा। परन्तु कुर्सी के दीवानों ने सिर्फ अपनी कुर्सी को सीधा करने के लिये बादशाह खान के अमीनों को कत्ल कर दिया। महात्मा गांधी के अभिमान के साथ गद्दारी की, हिन्दुस्तान की इन्टीग्रिटी को माननेवाले देशभक्तों के साथ गद्दारी की, सरदार भगत सिंह, अशफाकउल्ला खां ने इस लिये खून नहीं दिया था, इस लिये हंसते हुये फांसी पर नहीं चढ़े थे कि कुछ आदमियों की कुर्सियां सीधी हो जायें, कुछ आदमियों को मिनिस्टर और प्राइम मिनिस्टर बनाने के लिये कुर्बानी नहीं दी थी, इस लिय कुर्बानी नहीं दी थी कि देश के साथ गद्दारी की जायगी, देश का बटवारा किया जायगा। आज भी समय है जब हम अपने दिल और दिमाग से सोचें। यह 52 करोड़ इन्सानों का मसला है। 52 करोड़ इन्सान अपनी हिफाजत नहीं कर सके, आज तक तहियां नहीं कर सके कि हम हिमालय को वापस लेंगे, यह सरकार हमेशा बीकनेस दिखला सकी, आज वे कैसे आगे बढ़ेंगे। जो दूसरे की जुबान में सोचते हैं, जो दूसरे देश की विचार प्रणाली में सोचते हैं, जो गरीबी का नाम लेकर, टैक्स का नाम लेकर देश के अन्दर दूसरे देशों की ग्योरी को लाना चाहते हैं, वे इस देश के दुश्मन हैं, वे इस देश को कभी आगे नहीं ले जा सकते। अब कोई न कोई लाइन आपको कायम करनी पड़ेगी। जो हमारे नेशनल फ्लैग को जलाते हैं, जिन्होंने लोगों में टिकट बांटें हैं—आप आसाम में जाइये, आपको वहां पांच रुपये का टिकट मिल जायगा जिसमें चीनियों का यह सबक दिया हुआ है कि जिस वक्त चीन की फौज यहां आयेंगी यह टिकट दिखला देना कोई तुम्हारा बाल टेढ़ा नहीं कर सकता—उन लोगों को अनलाफुल करार देना चाहिये, उन के लिये कोई कानून होना चाहिये। हम ऐसी बातें अपनी आंखों से देखते हैं और कानों से सुनते हैं—इस दरिया का नाम हिन्दुस्तान नहीं है, इन दरख्तों का नाम हिन्दुस्तान नहीं है, इन झाड़ियों का नाम हिन्दुस्तान नहीं है, इन बागों का नाम हिन्दुस्तान नहीं है—और इसी बीच में नारा लग जाता है भूख का। भूख इस लिये है कि हिन्दुस्तान एक जंजीर में नहीं बंध सका। भूख और गरीबी इस लिये है कि भारत वर्ष को आज तक संगठन का, तंजिम का सबक नहीं दिया गया, वर्ना 52 करोड़ अगर इकट्ठे हो कर पानी के लिये कोशिश करते—देश में गंगा और जमुना में इतना पानी है, देश के दूसरे दरियाओं में इतना पानी है कि देश मालामाल हो जाता। हमेशा 52 करोड़ को बांटा गया, किसी को भाषा के नाम पर, किसी को पंजाब और हरियाणा के बाउन्ड्री के नाम पर—स्पीकर साहब खुद रेल के ऊपर कुर्सी बिछा कर बैठ गये—स्पीकर का काम यह नहीं है। जिस तरह से हमारे स्पीकर साहब डिसिप्लिन चलाते हैं, इस तरह से डिसिप्लिन को चलाना चाहिये।

मैं आपसे अर्ज करना चाहता हूं, उपाध्यक्ष महोदय, हमारे यशस्वी उपप्रधान मंत्री बैठे हैं—उन से मेरा आपके द्वारा यह निवेदन है कि जहां करोड़ों रुपया दूसरे किस्म की ट्रेनिंग और शिक्षा पर खर्च किया जा रहा है वहां सबसे ज्यादा जरूरत इस बात की है कि हम जिस सैक्यूलरिज्म को, जिस नैशनिलज्म को, जिस राष्ट्रीयता को देश में लाना चाहते हैं और जो महात्मा गांधी का आदर्श था, जो मौलाना अब्दुल कलाम आजाद का आदर्श था, जो हमारे शहीदों का आदर्श था, अगर उस राष्ट्रीयता, नैशनलिज्म, सैक्यूलरिज्म को कायम करना चाहते हैं तो उस के लिये स्कूल खोलने पड़ेंगे, कालिज खोलने पड़ेंगे कैम्पस कायम करनें पड़ेंगे, सेमिनार बुलाने पड़ेंगे, फिल्में बनवानी पड़ेंगी, इस के लिये प्रचार के साधन जुटाने पड़ेंगे। आज देश की की विचारधारा को उस दिशा में ले जाने के लिये कहीं किसी तरह का कोई प्रचार नहीं

(श्री यशपाल सिंह)

है, कोई शिक्षा नहीं है कि हमारा मुल्क अपने सोचने के, ख्याल करने के, अपने विचार करने के तरीके को बदल दे । आज जब छोटे छोटे मुल्क एक सूत्र में पिरोये जा सकते हैं तो हमारा 52 करोड़ का यह मुल्क एक सूत्र में क्यों नहीं पिरोया जा सकता ।

इसलिये मेरी आपसे दरख्वास्त है कि आज यह एलान कीजिये—मैंने यह बिल इस लिये नहीं रखा है कि इस को वापस लिया जाय या इस पर डिस्कशन हो कर खत्म हो जाय—मैंने यह बिल इस लिये रखा है कि इस पर खुले दिल से इस पार्लियामेंट को मौका दिया जाय कि सदस्य अपने विचार रख सकें और इस के लिये कोई शिक्षा प्रणाली, कोई स्कल और कालिज, कोई एजूकेशन, कोई सेमिनार बुलाये जायें ताकि देश के अन्दर वह वायुमण्डल पैदा हो कि 52 करोड़ इन्सान एक मां-बाप के बेटे और बेटी की तरह एक लाइन में खड़े हो कर अपने देश की रक्षा कर सकें । लेकिन, उपाध्यक्ष महोदय, इन्हें अपने देश की रक्षा नहीं करनी है । ये न देश की रक्षा कर सकते हैं और न देश को शिक्षा दे सकते ह, न देश की बुभुक्षा को दूर सकते हैं, इन का काम है भिक्षा-मांगना । भीख मांगने का काम इन के बस का है, लेकिन देश की हिफाजत का काम इन के बस का नहीं है । इस लिये मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि मेरे इस बिल पर डिस्कशन शुरू किया जाय ।

MR. DEPUTY-SPEAKER : The purpose of the Bill seems to be to enhance penalty and amendment to the Penal Code, but the hon. Member has not mentioned anything about that.

SHRI RABI RAY (Puri): You may please give him some time for that.

MR. DEPUTY-SPEAKER : Motion moved :

> "That the Bill to provide for punishment to persons found guilty of treason and matters connected therewith be circulated for the purpose of eliciting opinion thereon by the 31st December, 1968."

श्री शिव नारायण (बस्ती) : उपाध्यक्ष महोदय, मेरे मित्र यशपाल सिंह जो बिल लाये हैं—जो कानून के साथ गद्दारी करते हैं, जो ट्रेटर हैं, उन के लिये इन्होंने रिक्वेस्ट की है कि कोई काम्प्रीहेन्सिव लॉ लाया जाय । यह चीज सरकार के विचाराधीन है, सरकार इस के अगेंस्ट नहीं है और हमारी ला मिनिस्ट्री में बड़े बड़े कानून के पंडित इस पर विचार कर रहे हैं ? लेकिन यशपाल सिंह जी ने जो बात कही है.....

श्री ओम प्रकाश त्यागी (मुरादाबाद) : उन्होंने कुछ और भी कहा है ।

श्री शिव नारायण : उन्होंने उसी बात को एक्सटेण्ड कर के समझाया है । उन्होंने एक बात यह कही है कि शेख अब्दुल्ला जब आते हैं तो उनके जल्से में पांच लाख आदमी आते हैं, —यह बात उन्होंने उल्टी कह दी । हमारे होम मिनिस्टर का वह व्यक्तित्व है कि जब एनाउन्स होता है कि चह्वाण साहब आयेंगे, लाखों आदमी उन को सुनने के लिये पहुंच जाता है । शेख अब्दुल्ला के जाने पर लोग नहीं आते हैं, उन को तो पुलिस के कटघरे में जाना पड़ता है । मेरठ गये थे, पुलिस के कटघरे में गये थे । इस लिये ऐसी गलत प्रशंसा आपको नहीं करनी चाहिये जिसमें आप खुद कन्डेम हो जायें । आप राजपूत हैं—मैं आपको रिमाइण्ड कराना चाहता हूं कि इस देश में राणा प्रताप और जयचन्द दोनों पैदा हुए थे हम जयचन्दी नीति के समर्थक नहीं है, हम प्रताप की नीति के समर्थक हैं, हमने हल्दीघाटी को नहीं भुलाया है, जहां राणा प्रताप ने झोंपड़ी में घास की रोटी घो खाया था और हल्दीघाटी में देश की आंन के लिये उन के साथ अपनी तलवार को सीचा था ।

मैं सरकार से अपील करना चाहता हूं कि आप ऐसा सही कानून बनायें जो ऐसे लोगों को अपना सिर न उठाने दे —आज सुबह एक प्रश्न पर यहां बड़ा हंगामा मचा । यहां पर विदेशी आते हैं और ईसाई धर्म का प्रचार करते हैं— यह देश इतना सस्ता हो गया है कि लोग

सेवा और धर्म के नाम पर सबोटाज करें, देश के साथ विश्वासघात करें, कोई फादर फेरर का नाम लेता है—यह सब क्या है ? इस देश को समूचित ढंग से—चाहे हिन्दू हो, मुसलमान हो, ईसाई हो—जो इस देश में रहता है, इस देश का नागरिक है । हम ने कांस्टीचुशन में उन को समान अधिकार दिये हैं । अगर एक बम हैदराबाद में गिरेगा, तो न मिर्जा साहब बचेंगे और न शिव नारायण बचेगा, अगर बस्ती में एक बम गिरेगा तो मुसलमान भी मारे जायेंगे और चमार और पंडित भी मारे जायेंगे—इस लिये हमें इस देश को सही ढंग से चलाना चाहिये ....

श्री इन्द्रजीत सिंह मल्होत्रा (जम्मू) : काश्मीर में बम गिरा तो आपका क्या हुआ ?

श्री शिव नारायण : काश्मीर की प्रोटेक्शन का हम ने इन्तजाम कर रखा है । हम कमजोर नहीं हैं । हम काश्मीर के लोगों को विश्वास दिलाना चाहते हैं कि वह निश्चिन्त हो कर रहें ।

MR. DEPUTY-SPEAKER : The hon. Member may resume his speech on the next occasion. Now we have to take up the half-an-hour discussion.

17.30 hrs.

HALF-AN-HOUR DISCUSSION

SUPPLY OF TRACTORS

श्री रणधीर सिंह (रोहतक) : माननीय उपाध्यक्ष महोदय, देश के किसान के लिए ट्रैक्टर का मसला एक जिन्दगी और मौत का सवाल बना हुआ है । किसान की बड़ी जबर्दस्त लुटाई होती है, उसकी खाल उधेड़ी जाती है । ट्रैक्टर के मामले में लोग साजिश करके किसान को लूटते हैं । हमारी सरकार किसानों की बड़ी हमदर्द है । हमारे फूड मिनिस्टर देश के छटे हुये बेहतरीन लीडरों में से हैं जोकि किसानों से बड़ी हमदर्दी रखते हैं जिनकी रगों में किसान का खून है । हमारे देश की खुशकिस्मती है कि वे हमारे फूड मिनिस्टर हैं । उनके साथ जो टीम है वह भी किसान-बजीर हैं, उनके दिलों में भी किसान के लिए बड़ी तड़प है । लेकिन मुझे अफसोस है कि इनके होते हुये भी किसानों का कोई पुरसां हाल नहीं है ।

डिप्टी स्पीकर महोदय, ट्रैक्टर इस देश में अनाज की पैदावार की जान है । अनाज की पैदावार पर सारे देश की खुशहाली निर्भर करती है । देश की खुशहाली पर हमारे देश के जो 55 करोड़ लोग हैं उनका मुस्तकबिल वास्ता है । लेकिन बड़े अफसोस की बात है कि किसान ज्यादा से ज्यादा अनाज पैदा करना चाहता है लेकिन कुछ मफाद-परस्त लोग, कुछ वेस्टेड इन्टेरेस्टस ऐसे हो गए हैं जो हुकुमत की नहीं चलने देते हैं और उनके हाथों किसान भी बेबस हो गए हैं । मेरे पास रिपोर्ट है, कटिंग्ज भी हैं, हुकुमत की तरफ के दिए गए बयानात हैं, पार्लमेंट में किए गए क्वेश्चन्स हैं और उनके जवाबात हैं और गवर्नमेंट आफ इंडिया ने जो टैरिफ कमीशन बिठाई थी उसकी रिपोर्ट भी है ? एक-एक बात और की बड़े जोर से छान-बीन की गई लेकिन वही ढाक के तीन पात । किसान बेचारा रोता फिरता है, अपने लिए नहीं बल्कि देश के लिए वह कहता है कि हम ज्यादा अनाज पैदा करना चाहते हैं । लेकिन दूसरी तरफ सरमाएदार कहते हैं कि इस देश में ज्यादा ट्रैक्टर चल नहीं सकते हैं । इस देश में 35 फीसदी किसान ऐसे हैं जिनके पास जोने के लिये बैल भी नहीं हैं और 80 फीसदी किसान ऐसे हैं जिनके पास छोटी होल्डिंग्ज हैं, वे बैल से खेती करना चाहते हैं, ट्रैक्टर लेना नहीं चाहते हैं और देश की जैसी जमीन है उसमें ट्रैक्टर का इस्तेमाल हो ही नहीं सकता है । यह सारी उनकी दलीलें हैं । उन बेइमान लोगों की जो यह दलीलें हैं क्योंकि किसान को मारना चाहते हैं, जो देश को मारना चाहते हैं और हुकुमत पर भी अपना चंगुल रखना चाहते हैं । इस किस्म के लोगों के इरादे हैं—वे पांच ही हैं—जो कि आज सारे देश में ट्रैक्टर के प्रोडक्शन में मानोपोलिस्ट्स बने हुये हैं । मुझे खुशी है कि अब डि-लाइसेंसिंग कर दिया गया है लेकिन क्या होगा इस डी-लाइसेंसिंग से ?